1

नारायण सूक्त

नारायण सूक्त एक प्रकार से वेद में उल्लेखित पुरूष सूक्त का ही रहस्यमय भाग है। दोनों में केवल संबोधन किये जा रहे देवता का ही अन्तर है। पुरूष सूक्त में सर्वोच्च सत्ता को सर्वव्यापी अभूर्त पुरूष के रूप में बताया गया है जबकि नारायण सूक्त में उसे नारायण के रूप में संबोधित किया है। पुरूष सूक्त में सृष्टि के परे, सृष्टि में लीन पुरूष के विषय मे बताया गया है जबकि नारायण सूक्त में स्पर्शात्मक, भावनात्मक पूर्ण सृष्टि के रचनाकार (नारायण) की विशषेताओं का उल्लेख किया गया है।

नारायण सूक्त में पुरूष सूक्त में छुपे गुढ़ार्थ का भी स्पष्टीकरण दिया गया है।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- नारायण सूक्त का उच्चारण कर पाने में; और
- नारायण सूक्त का महत्त्व समझ पाने में ।

1.1 नारायण सूक्त

नारायण को हजार शीर्ष वाला, हजार आंखों वाला तथा हजार अंगों वाला बताया गया है। परंतु नारायण सृष्टि के परे रहकर सृष्टि का निर्माण करने वाला नहीं है बल्कि वह प्रत्येक के हृदय में एक अप्रतिम ज्वाला की तरह छुपा रहता है। नारायण की कल्पना हम गहरा ध्यान लगाकर कर सकते हैं। हृदयकमल में ब्रह्माण्ड़ के गढ़ में ब्रह्माण्ड़ का निर्माता अपने महल में बैठा है। इसलिए नारायण के उपासकों को उसकी प्रशंसा में और उसे देखने के लिए आसमान में देखने की जरूरत नहीं है। कोई भी नारायण को अपने भीतर, अपने हृदय में उसे महसूस कर सकता है। जब नारायण बाहर रहकर जगत का निर्माण करता है तो वह भावनाओं और कर्मों से अपने आपको महसूस करवाता है। प्रत्येक माध्यम से जीवन का प्रवाह और कंपन होता है। यह कंपन, जीवन का यह प्रवाह ही नारायण के सृष्टि निर्माण का चैतन्य अर्थात चेतना है। नारायण ब्रह्मा, विष्णु और शिव, इन्द्र तथा अन्य देवताओं तथा देवदूतों से परें विस्तारित रूप में माने गये हैं जबकि स्वयं उनमें हर एक के रूप में, अविनाशी रूप में आत्म–अस्तित्व रूप में है। यह ब्रह्माण्ड दृश्य अथवा अदृश्य है, इसकी गहराई में, यह जिसके बारे में कभी सुना नहीं, सब में नारायण इनके रूप में या बिना इनके प्रत्येक

को आच्छादित किए हुए है। नारायण हमें आशिर्वाद दे और हमें गौरव दिलाएं।

तैत्तिरीयारण्यकम् - ४ प्रपाठकः - १० अनुवाकः १३

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै ।

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

परम आत्मान्! कृपया हम दोनों गुरू और शिष्य एक साथ रक्षा करें, हमारा एक साथ पालन–पोषण करें। हमें जो ज्ञान मिला है, वह महिमा और परिश्रम से हो। हमारे बीच कभी विरोधी भावना या विचार ना हों। तीनों दुःख अध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक से हमें शान्ति मिले।

शान्ति की स्थापना हो।

ॐ ॥ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशम्भुवं ।

विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम् ।

sahasra-śīrṣaṁ devaṁ viśvākṣaṁ viśva-śaṁbhuvam |

viśvaṁ nārāyaṇaṁ devam-akṣaraṁ paramaṁ padam || 1 ||

सहस्र शिर से युक्त परम पुरूष नारायण परमात्मा समस्त विश्व को प्रकाशित करने वाला, समस्त प्राणियों के द्रष्टा होते हुए विश्वाक्ष हैं। अतः इस जगत के प्राण रक्षा परम् पुरूष ही करता हैं। ये पुरूष नारायण परमात्मा स्वरूप हैं वो सर्व व्यापक होते हुए भगवान नारायण ही हैं। नारायण पुरूष से ही समस्त पापादि नष्ट होते हैं।

विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणः हरिम् ।

विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्वमुपजीवति ।

viśvataḥ paramān-nityaṁ viśvaṁ nārāyaṇaguṁ hariṁ |

viśvam evedaṁ puruṣastad viśvam upajīvati || 2 ||

इस जगत में परम पुरूष ही नित्य हैं। इस जगत् में उत्पन्न जो भी जीव है वह नारायण परमात्मा का ही अंश हैं। नारायण परमात्मा अकाय होते हुए भी शरीरधारी जीवों की आत्मा में अभिव्यक्त होते हैं। वहीं देवरूप में जन्म लेकर भक्तों के दुःखों का नाश करते हैं।

पतिं विश्वस्यात्मेश्वरः शाश्वतः शिवमच्युतम् ।

नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम् ।

patiṁ viśvasyātmeśvaraguṁ śāśvataguṁ śivam acyutam |

nārāyaṇaṁ mahā-jñeyaṁ viśvātmānaṁ parāyaṇam || 3 ||

परम् पुरूष नारायण परमात्मा हैं। ये ही ब्रह्माण्ड का पालन एवं रक्षा करते हैं। ये परम पुरूष अपने आप में परब्रह्म का प्रतिरूप हैं। ये नारायण पुरूष ही शुभ अविनाशी हैं। प्रकृति की सभी वस्तुओं और प्राणियों का कल्यण करने वाले परम् पुरूष नारायण ही हैं। महा नारायण परमात्मा सर्वज्ञ हैं। ये परम् पुरूष विश्वात्मा स्वरूप हैं तथा निष्ठावान हैं।

नारायणपरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः ।

नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः ।

नारायणपरो ध्याता ध्यानं नारायणः परः ।

nārāyaṇa paro jyotir-ātmā nārāyaṇaḥ paraḥ |

nārāyaṇa paraṁ-brahma tattvaṁ nārāyaṇaḥ paraḥ || 4 ||

nārāyaṇa paro dhyātā dhyānaṁ nārāyaṇaḥ paraḥ || 5 ||

परम् पुरूष नारायण ही ज्योति के स्वरूप हैं। भगवान नारायण ही परमकलिक सत्य हैं। नारायण परमात्मा ही परब्रह्म परमात्मा के तत्त्व के यथार्थ स्वरूप हैं। नाराायण परमात्मा ही ध्याता तथा ध्यान हैं।

यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यतें श्रूयतेऽपि वा ॥

अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ।

yacca kiñcit jagat sarvaṁ dṛśyate'pi vā |

antar-bahiśca tat sarvaṁ vyāpya nārāyaṇaḥ sthitaḥ || 6 ||

इस समस्त ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी हम देखते हैं अथवा जो कुछ भी हम सुनते हैं और आन्तरिक है या बाह्य है, सब कुछ में नारायण परमात्मा ही व्याप्त हैं।

अनन्तमव्ययं कविꣳ समुद्रेऽन्तं विश्वशम्भुवम् ।

पद्मकोश प्रतीकाशꣳ हृदयं चाप्यधोमुखम् ।

anantam avyayaṁ kaviguṁ samudrentaṁ viśva śaṁbhuvam |

padma kośa pratīkāśaguṁ hṛdayaṁ cāpyadhomukham || 7 ||

परम् पुरूष नारायण परमात्मा ही अनन्त अव्यय (नाश रहित), सर्वज्ञ, समुद्र के समान विस्तृत, जगत में व्याप्त एकमात्र भगवान हैं। कमल

रूपी पद्म कोश अथवा हिरण्यगर्भ व कमल रूपी हृदय में व्याप्त हैं। ये महानारयण परमात्मा ही सब में अधोमुख तथा बाहरी मुखी हैं। अर्थात सब शरीरधारी जीवों के दृष्टा तथा सम्पूर्ण विश्व के दृष्टा महानारायण परमात्मा हैं।

अधो॑ नि॒ष्ट्या वि॒तस्या॒न्ते ना॒भ्यामु॑परि॒ तिष्ठ॑ति ।

ज्वा॒ल॒मा॒लाकु॑लं भा॒ति वि॒श्वस्या॑यत॒नं म॑हत् ।

adhȯ ni̱ṣṭyā vi̇tastyā̱nte̱ nā̱bhyām u̇pari̱ tiṣṭhȧti |

jvā̱la̱-mā̱lā-ku̇laṁ bhā̱tī̱ vi̱śvasyā̇yata̱naṁ mȧhat || 8 ||

वह नारायण नाभी के ऊपर में हमारे हृदय कमलासन के समान हमारे हृदय के गुहा में चेतन रूप में स्थित हैं। ज्वाला लपटों की माला के प्रकाश के समान पुरे ब्रह्माण्ड में एक रस रूप में व्याप्त हैं।

सन्त॑तꣳ शि॒लाभि॑स्तु॒लम्ब॑त्याकोश॒सन्नि॑भम् ।

तस्यान्ते॑ सुषि॒रꣳ सू॒क्ष्मं तस्मि॑न् स॒र्वं प्रति॑ष्ठितम् ।

santȧtaguṁ śi̱lābhi̇stu̱ lambȧtyā kośa̱ sanni̇bham |

tasyāntė suṣi̱raguṁ sūkṣmaṁ tasmi̇n sarvȧṁ pratiṣṭhitam || 9 ||

तंत्रिका–तंत्र धारयाँ से सब ओर से घिरा हमारा नरनाडी हृदय कमल में आकर ठहरता है, सुक्ष्म स्थान में जो सुषुम्न नाडी पायी जाती हैं वहीं जीवन का आधार हैं। अतः भगवान नारायण ही जीवों में व्याप्त होते हुए सब जीवों के जीवन का आधार हैं।

तस्य॒ मध्ये॑ म॒हान॑ग्निर्वि॒श्वार्चि॑र्वि॒श्वतो॑मुखः ।

सोऽग्र॑भुग्विभ॑जन्ति॒ष्ठन्नाहा॑रमज॒रः क॒विः ।

tasya॒ madhye॑ ma॒han-a॑gnir vi॒śvārci॑r vi॒śvato॑-mukhaḥ |

so'gra॑bhu॒g vibha॑jan ti॒ṣṭha॒n nāhā॑ram aja॒raḥ ka॒viḥ || 10 ||

उस हृदय कमल के अन्दर जो महान अविनाशी अग्नि है, जिसके जीभ चारों विस्तृत हुआ हैं, जिसके मुख हर है, दिशाओं में देखते हुए है, जो भी भोजन हम करते हैं उसको जो पचाता है, वहीं आत्मा सता हैं।

ति॒र्य॒गू॒र्ध्वम॑धश्शा॒यी॒ र॒श्मय॑स्तस्य॒ सन्त॑ता ।

स॒न्ता॒पय॑ति स्वं दे॒हमापा॑दतल॒मस्त॑कः ।

तस्य॒ मध्ये॒ वह्नि॑शिखा अ॒णीयो॑र्ध्वा व्य॒वस्थि॑तः ।

tī॒rya॒g ū॒rdhvaṁ a॑dhaś-śā॒yī॒ ra॒śmaya॑s tasya॒ santa॑tā |

sa॒ntā॒paya॑ti svaṁ de॒ham āpā॑da tala॒-mastakaḥ ||

tasya॒ madhye॒ vahni॑ śikhā a॒ṇī॒yo॑rdhvā vya॒vasthi॑taḥ || 11 ||

उस महानारायण पुरूष की प्रकाश रूपी रश्मियां उर्धव तिर्यग रूप से प्रकाशित हैं। इनके मध्य में रसना के अग्नि रूप से शिर से लेकर पैट तक का शरीर संतप्त रहित होता हैं लेकिन इनके सुक्ष्म कारण शरीर सब से परे होते हैं। उस काले बादलों के समान अंधकार में गिर कर जीव अपने आपको छोटे लकीर के रूप में प्रतित कर लेता हैं जब भौतिक जगत से दूर होता है तब अपने आपको सत्य की प्रतिति

कराता है। अर्थात अहं ब्रह्मास्मि इति जानकर अपने आपको महान ब्रह्म प्रतित कर लेता हैं।

नीलतोयदमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा ।

नीवारशूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा ।

nīla-tóyadá madhyasthād vidyullékheva bhāsvárā |

nīvāra śūkávat tanvī pītā bhā̃svatyaṇūpámā || 12 ||

वह परम पुरूष नीले आकाश में वर्षा बादलों के बीच में तडित की एक छोटी सी रेखा के समान प्रकाशित होकर भी सारे जगत् को प्रकाशित करता हैं एवं चावल के दाने सूवर्ण रंग से युक्त होकर तथा सुक्ष्म अणुओं में भी अणु के बार–बार में अपने रूप में परिपूर्ण होते हुए ज्ञान को बढ़ाते हुए सर्व प्राकशित हो जाता हैं।

तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः ।

स ब्रह्म स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट् ॥

tasyā̃ śikhāya mádhye paramā̃tmā vyavasthitaḥ |

sa brahma sa śivas sa haris sendra so'kṣáraḥ paramas svarāṭ || 13 ||

उस हृदय कमल के कोर में वह पर ब्रह्मा व्यवस्थित है। वह परम ब्रह्म कल्याणकारी है, वह शिव है। वह इन्द्र रूप है, परमाक्षर ऊँ कार ही परम शक्ति रूप में व्याप्त है।

ऋतꣳ सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् ।

ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः ।

ṛtaguṁ satyaṁ paraṁ brahma puruṣaṁ kṛṣṇa piṅgalam |

ūrdhva-retaṁ virūpākṣaṁ viśva-rūpāya vai namo namaḥ || 14 ||

परमात्मा ही समस्त जगत् हैं, वहीं परम ब्रह्म विरूपाक्ष हैं। वह कृष्ण और पीत वस्त्र युक्त हैं। वह ऊध्वरेत हैं। ऐसे परम षुरूप जो विश्व में अधिभूत हैं उनको हम सब नमन करें।

ऊँ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।

तन्नो विश्णुः प्रचोद्यात् ।।

oṁ nārāyaṇāya vidmahe vāsudevāya dhīmahi |

tanno viṣṇuḥ pracodayāt || 15 ||

उस परमात्मा के ब्रह्म स्वरूप ज्ञान से आत्मा का साक्षात्कार करने हेतु उस वासुदेव का ध्यान करते हैं, उसको प्राप्त करने के लिए भगवान विष्णु हमें प्रेरित करें।

क्रियाक्लाप

- प्रतिदिन सूबह कोई भी कार्य करने से पहले नारायण सूक्त का उच्चारण करें।

पाठगत प्रश्न– 1.1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. विश्वँ ..... देवमक्षरँ परमं पदम् ।
2. नारायणं महाज्ञेयं ..... परायणम् ।
3. ..... तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ।
4. ..... भाति विश्वस्यायतनं महत् ।
5. ..... स्वं देहमापादतलमस्तकः ।

आपने क्या सीखा?

- नारायण सूक्त का अर्थ
- नारायण की प्रकृति

Reference :

1. Taittiriya ranyakam
2. Sukta Sangraha by pandit Sri Ram Ramanuja Acharya, 2017

पाठांत प्रश्न

1. नारायण सूक्त के गुढ अर्थ का वर्णन कीजिए।

उत्तरमाला

1.1

(1)

1. नारायणं
2. विश्वात्मानं
3. अन्तर्बहिश्च
4. ज्वालमालाकुलं
5. सन्तापयति